जैन विद्या एवं प्राकृत (फोल्डर नं. ०१४०२६)

मुख्य टाइटल

सम्पादकीय

विषय-सूची

जैन श्रमण परम्परा-इतिहास, कला और संस्कृति

जैन श्रमण परम्परा का दर्शन ---- १-६

जैनधर्म और संस्कृति ---- ७-१४

समन्वय की साधना और जैन संस्कृति ---- १५-२३

जैन एवं बौद्धधर्म ---- २४-२७

भारतीय संस्कृति में जैन धर्म ---- २८-३२

भारतीय विचारधारा और जैन दृष्टि ---- ३३-३७

जैन कला का अवदान ---- ३८-६१

गुजरात में जैनधर्म और जैनकला ---- ६२-७२

जैन शासक अमोघवर्ष प्रथम ---- ७३-७८

Emperor Kharavela and the Jaina Tradition in Orissa ---- 79-82

जैन चिन्तन और समाज विज्ञान

जैन शास्त्रों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक तत्त्वों का मानव वैज्ञानिक अध्ययन ---- ८५-९१

Jain Contribution to Indian Society ---- 92-98

The sociological and historical background…. ---- 99-106

सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरप्रदेश के कतिपय विशिष्ट जैन व्यापारी ---- १०७-१२३

अपराजितपृच्छा में चित्रित सामाजिक दशा ---- १२४-१२७

जैन पुराणों में वर्णित प्राचीन भारतीय आभूषण ---- १२८-१४०

जैनयोग, आधुनिक संत्रास एवं मनोविज्ञान ---- १४१-१४९

जैन शिक्षा-उद्देश्य एवं विधियाँ ---- १५०-१५६

Jain Path of Education ---- 157-164

जैन धर्म-दर्शन और विज्ञान

Anekanta and Problem of Meaning ---- 167-176

Works on anupreksa in Kannada Literature ---- 177-184

जैन आगमों में सूक्ष्म शरीर की अवधारणा और आधुनिक विज्ञान ---- १८५-१९०

जैनदर्शन में कर्मवाद और आधुनिक विज्ञान ---- १९१-१९३

Scientific Contents of Jaina Canons-Astapahuda by Kundakunda ---- 194-205

On Contribution of Jainology to Indian Karma Structures ---- 207-217

प्राकृत, भारतीय भाषाएँ और साहित्य

Date of Second Middle Indo-Aryan A Fresh Chronological Estimate ---- 221-224

Assimilation of Conjunct consonants in Prakrit and Greek ---- 225-228

The Prakrit-A Review ---- 229-235

The Prakrta in Karnataka ---- 236-239

सांस्कृतिक संकट के बीच प्राकृत ---- २४०-२५०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पालि और प्राकृत -- २५१-२५६
प्राकृत भाषा-एक अविच्छिन्न धारा ---२५७-२६२
वैदिक भाषा में प्राकृत के तत्त्व -- २६३-२८३
प्राकृत तथा अन्य भारतीय भाषाएँ-- २८४-३००
आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास और प्राकृत तथा अपभ्रंश ----------------------- ३०१-३०७
अपभ्रंश एवं हिन्दी जैन साहित्य में शोध के नये क्षेत्र-------------------------------------३०८-३१६
अपभ्रंश और हिन्दी में जैनविद्या विषयक अनुसन्धान की संभावनाएँ--------------------- ३१७-३२४

परिशिष्ट

प्राकृत एवं जैनागम विभाग ---३२५-३२७
जैनविद्या एवं प्राकृत-राष्ट्रीय संगोष्ठी-१९८१--- ३२८-३३२
संगोष्ठी एवं परिचर्चा में सम्मिलित विद्वान -- ३३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org